PHILOSOPHY

PG, Paper VIII (Sem. II); Hons., Paper I (Part I)

Conception of World (Shankar)

Dr. S.K. Singh
Mob.-9431449951

जगत विचार (शंकराचार्य)

→ शंकराचार्य अपने ग्रंथों में बार-बार यह उद्घोष करते हैं कि - 'ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या जीवो ब्रह्मैव नापरः', अर्थात् ब्रह्म ही एकमात्र सत्य है, जगत् मिथ्या है, जीव ब्रह्म से भिन्न नहीं है।

→ शंकराचार्य के अनुसार कार्य कारण से अपृथक है, उसकी एक अवस्थामात्र है - 'कारणस्यैवस्थामात्रं कार्यम्'। उन्होंने कार्य को कारण का वास्तविक विकार न मानकर उसका विवर्त माना है।

→ शंकर सत्कार्यवाद के एक रूप ब्रह्म-विवर्तवाद में विश्वास करते हैं। इसके अनुसार जगत ब्रह्म का विवर्त है, वास्तविक परिणाम नहीं है। माया युक्त ब्रह्म इस जगत का निमित्त और उपादान कारण दोनों है। माया के कारण ही यह ब्रह्म प्रपञ्चात्मक जगत के रूप में आभासित होता है। पारमार्थिक दृष्टि से केवल ब्रह्म की ही वास्तविक सत्ता है, जगत मिथ्या है।

→ ~~इस प्रकार~~ शंकराचार्य इसी विवर्तवादी अर्थ में जगत को कार्य और निरपेक्ष ब्रह्म को कारण माना है। दृश्य जगत का वास्तविक कारण स्वयं ब्रह्म है जो अपने आपमें ~~अभिन्न~~ अभिन्न है और कार्य-संवृतियाँ (जगत) मिथ्या है।

→ शायद इसे 'सत्कारणवाद' कहना अधिक उचित होगा ~~क्योंकि~~ क्योंकि अकेला कारण (अद्वैत ब्रह्म) ही सत् है और सदा वर्तमान है तथा कार्य-संवृतियाँ (जगत) अपने आपमें मिथ्या है।

→ यहाँ 'विवर्त' का अर्थ है कि कारण-कार्य संबंध ~~अपरिभाष्य~~ ~~अपरिभाष्य~~ अपरिभाष्य है, कार्य को न सत् कहा जा

Scanned with CamScanner

सकता है, न असत्। जगत सत और असत से विलक्षण मिथ्या है। जगत सत नहीं है क्योंकि ब्रह्म-ज्ञान से इसका बाध हो जाता है। जगत असत भी नहीं है क्योंकि इसका अनुभव किया जाता है। इस प्रकार सत-असत के आधार पर देखने से जगत का मिथ्यात्व स्पष्ट होता है।

~~अद्वैत वेदान्त~~

→ अद्वैत वेदान्त के भाष्यकार स्वामी विद्यारण्य ने अपने 'पंचदशी' में जगत के स्वरूप का वर्णन इस प्रकार किया है-

(i) जगत पारमार्थिक दृष्टि से असत है।

(ii) जगत व्यावहारिक दृष्टि से सत है।

(iii) जगत तार्किक दृष्टि से अनिर्वचनीय है।

→ जगत की व्यावहारिक सत्ता, जब तक हम व्यावहारिक जगत में रहते हैं, बनी रहती है अर्थात जगत व्यावहारिक दृष्टि से सत है। पारमार्थिक ब्रह्मानुभूति के बाद ही सारी कार्य-संभूतियाँ तिरोहित होती हैं, पहले नहीं, अर्थात पारमार्थिक दृष्टि से जगत असत है। पुनः दृश्य-जगत और निरपेक्ष सत्ता की एक कोटि नहीं है। यदि ऐसा होता तो सांख्य और रामानुज की तरह कार्य को कारण का तात्विक परिणाम माना जाता। अतः ~~कारण~~ कार्य (जगत) तार्किक दृष्टि से ~~अनिर्वचनीय~~ विवर्त अर्थात अनिर्वचनीय है।

→ अद्वैत वेदान्त का विवर्तवाद उसकी तत्त्वमीमांसा का ही प्रतिफल समझा जायेगा। इसके अनुसार कार्य की व्यावहारिक दृष्टि से उपयोगिता होते हुये भी तत्त्व की दृष्टि से कार्य, कारण का कोई परिवर्तित रूप नहीं है। वास्तव में, कारण (ब्रह्म) और कार्य (जगत) तत्त्व की दृष्टि से अभिन्न है।

Scanned with CamScanner